INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in September 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

आधुनिक भारतीय राजनीति में पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. पूजा नायक, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नेशनल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर
प्रीति पाण्डेय , शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, नेशनल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर, (संबद्ध दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं जिनके विचार एवं सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानववाद" और उनके सामाजिक, आर्थिक, व राजनीतिक दृष्टिकोण ने भारतीय जनसंघ के वैचारिक आधार को मजबूत किया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण की बात की, जिसमें विशेष रूप से गरीब, दलित, एवं वंचित वर्गों के उत्थान पर विशेष बल दिया है। उनका मानना था कि समाज का विकास तभी संभव है जब हर व्यक्ति को समान अवसर और संसाधन प्राप्त हों। उनके आर्थिक विचारों में स्वदेशी अर्थव्यवस्था एवं छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने का महत्व था। पंडित उपाध्याय का राजनीतिक दृष्टिकोण नैतिकता एवं सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने राजनीति को सेवा भाव का माध्यम माना और सत्ता समाज के कल्याण हित के लिए प्रतिबध्द होना चाहिए। उनके विचारों ने भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी को एक वैचारिक दिशा प्रदान की, जो आज भी पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों में परिलक्षित होती है।

मुख्यबिन्दु–पंडित दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय राजनीति, राजनीतिक विचार एवं दर्शन, समकालीन प्रासंगिकता

भूमिका

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीतिक विचार और दर्शन में एक महान व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके दूरदर्शी विचार, "एकात्म मानववाद" के सिद्धांत में समाहित हैं, जो समकालीन भारतीय राजनीति के वैचारिक ढांचे को आकार देते हैं। उपाध्याय का समग्र विकास, सामाजिक–आर्थिक समानता और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर केन्द्रित आधुनिक भारत की बहुआयामी चुनौतियों का समाधान करने में एक मार्गदर्शक प्रकाश प्रदान करता है। उपाध्याय द्वारा प्रस्तावित एकात्म मानववाद विकास के लिए एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण की वकालत करता है, जहां व्यक्ति व समाज एक सहजीवी संबंध में सह–अस्तित्व में रहते हैं। यह दर्शन भौतिकवाद एवं अतिवादी व्यक्तिवाद को अस्वीकार करता है, इसके बजाय एक ऐसे दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जहां आर्थिक विकास नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक विरासत के साथ संरेखित होता है।उपाध्याय का विचार सतत विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो मानव और पर्यावरणीय दोनों जरूरतों का सम्मान करता है, जो इसे आज के तेजी से बढ़ते वैश्वीकरण और पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में उल्लेखनीय रूप से प्रासंगिक बनाता है। सामाजिक–आर्थिक समानता पर उपाध्याय के विचार महत्वपूर्ण असमानताओं वाले युग में अत्यधिक प्रासंगिक बने हुए हैं। हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के निर्माण में उनका विश्वास अमीर और गरीब के बीच की दूरियों को पाटने के समकालीन प्रयासों से मेल खाता है। सामाजिक पदानुक्रम में अंतिम व्यक्ति के कल्याण को प्राथमिकता देने वाली नीतियों की वकालत करके, उपाध्याय का दृष्टिकोण समावेशी विकास और गरीबी उन्मूलन के उद्देश्य से आधुनिक पहलों के साथ संरेखित होता है। एक वैश्वीकृत दुनिया में जहाँ सांस्कृतिक पहचान अपने सामने चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहीं उपाध्याय जी का सांस्कृतिक संरक्षण को सुरक्षित करना एक मूल्यवान परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।उन्होंने विकास के एक ऐसी संरचना के लिए तर्क दिया जो स्वदेशी मूल्यों और परंपराओं में निहित है जबकि आधुनिकता के लाभकारी पहलुओं के लिए खुला है। यह संतुलित दृष्टिकोण प्रगति कोसांस्कृतिक निरंतरता के साथ एकीकृत करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, यह सुनिश्चित करता है कि भारत का विकास इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की कीमत पर न हो। राजनीतिक नैतिकता और नेतृत्व पर उपाध्याय के विचार आधुनिक राजनीतिक विचारों को प्रेरित करते रहते हैं। उन्होंने राजनीति को सार्वजनिक सेवा के एक साधन के रूप में देखा, जहाँ नेता नैतिक सिद्धांतों और आमजन की भलाई के प्रति प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित होते हैं। ऐसे युग में जहाँ राजनीतिक निराशावाद और भ्रष्टाचार व्याप्त है, उपाध्याय के आदर्श सार्वजनिक सेवा के महान उद्देश्य एवं राजनीतिक जीवन में ईमानदारी के महत्व की याद दिलाते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में प्रासंगिकता

दीन दयाल उपाध्याय एक बहुमुखी व्यक्तित्व होते हुए, न केवल एक राजनीतिज्ञ बल्कि एक विचारक, दार्शनिक एवं लेखक भी थे। उन्होंने एक विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी, जिसका स्वरूप श्रेष्ठ, शक्तिशाली और संतुलित हो। अपने राजनीतिक जीवन के बावजूद, उन्होंने व्यक्तिगत हितों और

सुख–सुविधाओं का त्याग करते हुए अपना जीवन समाज और राष्ट्र को समर्पित कर दिया।उन्होंने अध्ययन, लेखन और लोगों से मिलने–जुलने में अपने समय को समर्पित किया, जिससे उन्हें आम आदमी की समस्याओं को समझने और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करने का अवसर मिला। दीन दयाल एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जो भविष्य की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते थे और उनके प्रति आगाह करते थे। उन्होंने उपभोक्तावाद, मार्क्सवाद, लेनिनवाद, माओवाद और समाजवाद के विचार सहित उस समय प्रचलित विचारधाराओं पर विचार किया। उन्होंने शीत युद्ध के दौर में समाजवादी दलों की सक्रिय भागीदारी पर भी विचार किया। दीन दयाल की लोगों के जीवन पर तात्कालिक घटनाओं और विचारों के प्रभाव की गहरी समझ ने उन्हें इन समस्याओं के प्रभावी समाधान प्रस्तावित करने के लिए प्रेरित किया। राजनीति के प्रति उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण और उस समय की विचारधाराओं की उनकी गहरी समझ ने उनकी विरासत में योगदान दिया।उपभोक्तावाद पर आधारित पश्चिमी सोच ने पर्यावरण पर व्यक्तिगत जुड़ाव और भौतिक विकास को प्राथमिकता दी। इससे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप भौतिक विकास और प्रकृति का खतरनाक स्तर हुआ। वैश्विक सम्मेलनों और चर्चाओं के बावजूद, कोई समाधान नहीं मिला है, और उपभोक्तावाद ने अराजकता, परिवार टूटने और वृद्धाश्रमों के निर्माण की स्थिति को जन्म दिया है। विशेषज्ञ अब शोध पत्रों का विश्लेषण कर रहे हैं, उन्हें एहसास हो रहा है कि उनका समाजवाद उपभोक्तावाद में उलझ गया है। यह स्थिति अस्थिर है, जैसा कि दीनदयाल उपाध्याय ने छह दशक पहले भविष्यवाणी की थी, जिसमें उपभोक्तावाद के अपरिहार्य परिणामों के खिलाफ चेतावनी दी गई थी।भारत में कम्युनिस्टों ने भारत को विदेशी नजरिए से देखा, जिसके कारण समाज में आत्म–सम्मान की कमी हो गई और यह विश्वास पैदा हो गया कि हर अच्छी चीज विदेशी देशों से आती है। उन्होंने यह विचार भी प्रचारित किया कि कुछ भी हमारा नहीं है और सिर्फ सरकार पर निर्भर रहने वाले सुधार विफल हो गए हैं। समाजवादी विचार अब बड़े पैमाने पर सिद्धांतों तक ही सीमित रह गए हैं, जिनका व्यवहार में कोई क्रियान्वयन नहीं हो पाया है।

प्राचीनत परंपरा से सम्बन्धित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन राष्ट्रीय भावना को समझने और समस्याओं का समाधान खोजने पर केंद्रित है। यह व्यक्ति, मन, बुद्धि और आत्मा के महत्व पर जोर देता है, जिसमें हर जीवित प्राणी की आत्मा को ईश्वर का अंश माना जाता है।यह दर्शन सद्भाव, भेदभाव रहित और राष्ट्र की बेहतरी के लिए परिवार, समाज और देश के हितों का त्याग करने की प्रतिबद्धता को बढ़ावा देता है। राष्ट्रवाद का यह विचार हर नागरिक में मौजूद होना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि देश के हितों को परिवार के हितों से ज्यादाप्राथमिकता दी जाए। दीनदयाल जी ने एकात्म मानव दर्शन के महत्व को आगे बढ़ाने का कार्य किया, जो शाश्वत विचारों पर आधारित है और समग्र जीवन की रचनात्मक दृष्टि पर आधारित है। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति समग्र रूप से सोचती है और विदेशी विचारों को सार्वभौमिक नहीं मानती।अर्थव्यवस्था को हमेशा राष्ट्रीय जीवन के साथ तालमेल बिठाना चाहिए, जिसका उद्देश्य जीविका, पोषण और विकास के लिए बुनियादी संसाधनों का उत्पादन करना है। पश्चिमी सोच बढ़ती इच्छाओं और जरूरतों की निरंतर पूर्ति को प्राथमिकता देती है, प्रकृति की गरिमा की उपेक्षा करती है। खाद्य सुरक्षा का मुद्दा एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गया है, दीनदयाल जी ने कहा कि खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। समाज को बच्चों, बुजुर्गों, बीमारों और विकलांगों की देखभाल करनी चाहिए और अर्थव्यवस्था को इस कर्तव्य को निभाने की क्षमता पैदा करनी चाहिए। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। शिक्षा की प्रणाली भी चिंता पैदा करती है, महंगी शिक्षा सीमित वर्ग के लिए और सस्ती शिक्षा उन लोगों के लिए बुनियादी सुविधाएं प्रदान करती है, जिनकी पहुँच नहीं है। दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि शिक्षा समाज की जिम्मेदारी है और बच्चों को शिक्षा देना समाज के हित में है। अंत में, एकात्म मानव दर्शन, खाद्य सुरक्षा और शिक्षा पर दीनदयाल जी के विचार भारतीय संस्कृति और जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण के अभिन्न अंग हैं।

दीनदयाल जी का अंत्योदय विचार, जिसमें आमजन को स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधा के लिए प्रेषित करता है, आज भी भारत में प्रासंगिक है। उनका मानना है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मानव विकास में असमर्थ है और समाजवादी अर्थव्यवस्था विफल रही है।आयुष्मान योजना के तहत मौजूदा मोदी सरकार इसी विचार पर चल रही है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के बावजूद व्यक्तिवादी और उपभोक्तावादी सोच के कारण अमीर और गरीब के बीच की खाई कम नहीं हुई है। दीनदयाल उपाध्याय सरकार और समाज दोनों को जिम्मेदारी से काम करने के लिए प्रेरित करते हैं, समाज के सबसे निचले पायदान के लोगों के उत्थान को प्राथमिकता देते हैं। नींव से निर्माण शुरू करने और ऊपर से सफाई करने जैसे उनके

विचार समाज और सरकार दोनों पर लागू होते हैं और देश की मौजूदा समस्याओं को हल करने में मदद कर सकते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में सामाजिक योगदान

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में सामाजिक योगदान उनके एकात्म मानववाद के सिद्धांत, अंत्योदय और सामाजिक समरसता के माध्यम से प्रकट होता है।उनके विचार और सिद्धांत समाज के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हैं और एक समग्र, समरस और संतुलित समाज के निर्माण की दिशा में योगदान करते हैं।

एकात्म मानववाद:

उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद (Integral Humanism) समाज की समग्र उन्नति की अवधारणा पर आधारित है। इस सिद्धांत का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के सभी पहलुओं का संतुलित और समग्र विकास करना है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलू शामिल हैं। उनके अनुसार, समाज को एक जीवंत इकाई के रूप में देखा जाना चाहिए, जहां प्रत्येक व्यक्ति और तत्व एक–दूसरे से जुड़ा होता है और एक–दूसरे के विकास में सहयोग करता है।

अंत्योदय:

अंत्योदय का सिद्धांत उपाध्याय जी के विचारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका अर्थ है समाज के सबसे निचले स्तर पर खड़े व्यक्ति का उदय। उपाध्याय जी का मानना था कि समाज के सबसे गरीब और कमजोर वर्गों का उत्थान ही सच्चा विकास है। यह सिद्धांत आज भी गरीबों और वंचितों के कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।

सामाजिक समरसता:

उपाध्याय जी ने सामाजिक समरसता और एकता पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि समाज के सभी वर्गों और समुदायों में आपसी सहयोग और सौहार्द्र होना चाहिए। उन्होंने जाति, धर्म और भाषा के भेदभाव को समाप्त करने और एक समरस समाज की स्थापना पर जोर दिया। उनके विचार आज भी सामाजिक एकता और समरसता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरता:

उपाध्याय जी ने स्वदेशी के महत्व को भी प्रमुखता दी। उनका मानना था कि भारतीय समाज को अपनी जड़ों और परंपराओं से जुड़कर ही सच्ची आत्मनिर्भरता प्राप्त हो सकती है। यह विचार आज के आत्मनिर्भर भारत अभियान के संदर्भ में भी प्रासंगिक है।

विकेन्द्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता:

उपाध्याय जी ने शासन और प्रशासन के विकेन्द्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता का समर्थन किया। उनका मानना था कि सत्ता का केंद्रीकरण समाज के हित में नहीं है और स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की शक्ति होनी चाहिए। यह विचार आज के समय में भी स्थानीय शासन और प्रशासन की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

शिक्षा और संस्कृति:

उपाध्याय जी ने शिक्षा और संस्कृति के महत्व को भी स्वीकार किया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करना भी है। इसके अलावा, उन्होंने भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन पर जोर दिया।

पर्यावरण संरक्षण:

उपाध्याय जी ने पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर भी ध्यान दिया। उनका मानना था कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन संरक्षित रह सकें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में सामाजिक योगदान का सार यही है कि वे एक समग्र, समरस और संतुलित समाज की स्थापना की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनके सिद्धांत और विचार आज भी भारतीय समाज और राजनीति के विभिन्न पहलुओं में प्रासंगिक हैं और सामाजिक समरसता, अंत्योदय और आत्मनिर्भरता के माध्यम से समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

राजनीतिक विचार एवं दर्शन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार एवं दर्शन भारतीय जनसंघ की विचारधारा के लिए आधारभूत रहे हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध अवधारणा "एकात्म मानववाद" है, जो व्यक्ति और समाज के समग्र विकास पर जोर देती है। यहाँ उनके प्रमुख विचारों और दर्शन का विस्तृत विवरण दिया गया है:

- एकात्म मानववाद समाज में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र को परस्पर जुड़ी इकाइयों के रूप में देखता है जहाँ प्रत्येक का विकास महत्वपूर्ण है।
- व्यक्तियों का समग्र विकास के सन्दर्भ में उपाध्याय का मानना था कि एक व्यक्ति में चार पहलू शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा होते हैं। सच्चे विकास का मतलब इन सभी पहलुओं का संतुलित विकास है।
- उन्होंने आत्मनिर्भरता और स्वदेशी (स्वदेशी संसाधनों और उत्पादों का उपयोग) के महत्व पर जोर दिया, यह तर्क देते हुए कि भारत को अपने संसाधनों और परंपराओं के आधार पर विकसित होना चाहिए।
- उपाध्याय के अनुसार, राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, धर्म की उनकी अवधारणा व्यापक थी, जिसमें नैतिकता व सदाचार शामिल थे, जो उनका मानना था कि राजनीति को सही दिशा में ले जा सकते हैं।
- अंत्योदय का अर्थ है सामाजिक पदानुक्रम में अंतिम व्यक्ति का उत्थान। उपाध्याय का मानना था कि समाज का सच्चा विकास तब तक हासिल नहीं किया जा सकता जब तक कि सबसे निचले पायदान पर मौजूद व्यक्ति का उत्थान न हो जाए।
- उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार था कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, और इसकी संस्कृति इसकी पहचान है। उनका मानना था कि भारत की विविधता इसकी ताकत है और इसकी प्रगति के लिए इसकी संस्कृति को समझना और अपनाना आवश्यक है।
- उपाध्याय जी ने समाजवाद और साम्यवाद दोनों की आलोचना की, यह तर्क देते हुए कि ये विचारधाराएँ भारतीय समाज के लिए अनुपयुक्त थीं। उनका मानना था कि वे व्यक्तियों के समग्र विकास की उपेक्षा करते हैं।
- उन्होंने स्वदेशी अर्थव्यवस्था की वकालत की जहाँ उत्पादन और उपभोग स्थानीय संसाधनों और जरूरतों पर आधारित हो। उनका मानना था कि आत्मनिर्भरता एक मजबूत राष्ट्र की नींव है।
- शिक्षा के क्षेत्र में उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं पर आधारित प्रणाली का समर्थन किया। उनका मानना था कि शिक्षा से न केवल ज्ञान प्राप्त होना चाहिए बल्कि मूल्यों और नैतिकता का भी विकास होना चाहिए।
- उपाध्याय की धर्म की अवधारणा धर्म से कहीं अधिक व्यापक थी। उनके लिए, धर्म व नैतिक सिद्धांतों का एक समूह था जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक आचरण का मार्गदर्शन करना चाहिए।
- उन्होंने राष्ट्र के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक लोकाचार का वर्णन करने के लिए चिति एवं विराट की अवधारणाएँ पेश किया। चिति राष्ट्र की आत्मा या उसका आंतरिक सार है, जबकि विराट लोगों की सामूहिक चेतना में इस सार की अभिव्यक्ति है।
- उपाध्याय ने चार पुरुषार्थों (जीवन के लक्ष्य) की पारंपरिक भारतीय अवधारणा धर्म (कर्तव्य), अर्थ (धन), काम (इच्छा), और मोक्ष (मुक्ति) पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि इन लक्ष्यों की संतुलित खोज एक सामंजस्यपूर्ण और पूर्ण जीवन की ओर ले जाती है।
- वे शासन में विकेंद्रीकरण के समर्थक थे, उनका तर्क था कि प्रभावी और समावेशी शासन सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय निकायों को शक्ति वितरित की जानी चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार और दर्शन भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा को प्रभावित करते हैं और इसकी नीतियों को आकार देते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता, समग्र विकास और नैतिक शासन पर उनका जोर समकालीन भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बना हुआ है।

उपसंहार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दार्शनिक और वैचारिक योगदान भारतीय समाज के सामने आने वाली समकालीन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक कालातीत रूपरेखा प्रदान करते हैं। समग्र विकास, सामाजिक–आर्थिक समानता, सांस्कृतिक संरक्षण और नैतिक नेतृत्व पर उनका झुकाव आधुनिक भारतीय राजनीति के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जैसे–जैसे भारत 21वीं सदी की जटिलताओं का सामना कर रहा है वैसे ही उपाध्याय जी के द्वारा दिखाये गये मार्गदर्शन एवं प्रेरणा सकारात्मक प्रभाव प्रस्तुत कर रही है, जिससे उनके विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार एवं सिद्धांत न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि आज के सामाजिक,

आर्थिक, और राजनीतिक परिदृश्य में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत एवं विचार आधुनिक भारत के निर्माण और विकास के लिए मार्गदर्शक बने हुए हैं। उनकी विचारधारा व दृष्टिकोण को अपनाकर, हम एक अधिक न्यायसंगत, समरस एवं आत्मनिर्भर समाज की स्थापना कर सकते हैं। उनके विचारों का अध्ययन, समाज के अनुपालन और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय,दीनदयाल, इन्ट्रीग्ल ह्यूमनिस्म, न्यू दिल्ली: भारतीय जनसंघ, 1965
2. जाफरलॉट, क्रिस्टोफ, द हिंदू नेशनलिस्ट मूवमेन्ट एण्ड इण्डियन पालिटिक्स:1925 टू द 1990,लंदन: सी. हर्स्ट एंड कंपनी, 1996
3. राघवन, वी. आर, द पालिटिकल थाट्स आफ दीनदयाल उपाध्याय, न्यू दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, 2001
4. शर्मा, राम माधव, पंडित दीन दयाल उपाध्याय: आईडियोलाजी एण्ड प्रीसेप्शन, न्यू दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2005
5. नंदा, बल राम, पालिटिकल फिलोसफी आफ दीन दयाल उपाध्याय, न्यू दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, 2018
6. महाजन, गुरप्रीत, दीनदयाल उपाध्याय: आईडियोलाजी आप इन्ट्रीग्ल ह्यूमनिस्म, न्यू दिल्ली: रूपा पब्लिकेशन इण्डिया, 2019
7. सन्नी शुक्ला (2020), दीनदयाल उपाध्याय की राजनीति राष्ट्र के लिए समर्पित, इन्टरनेशनल जर्नल आफ क्रियेटिव रिसर्च थाट्स, वाल्यूम8,ईशू12,दिसम्बर 2020
8. डॉ. संजीत सिंह, एनालिटिकल स्टडी आफ लाइफ एण्ड वर्क आफ पंडित दीन दयाल उपाध्याय, आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर–जेएचएसएस) वाल्यूम 25,ईशू 8,सीरीज 15 (अगस्त 2020) 62–71
9. सिंह, श्याम सुंदर, दीन दयाल उपाध्याय: ए प्रोफाइल, न्यू दिल्ली: पब्लिकेशन डिवीजन, मीनिस्ट्री आफ इनफारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, गर्वनमेन्ट आफ इण्डिया 2000